इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम

प्रोफ़ेसर अल्लामा अली मुहम्मद नक़वी साहब क़िब्ला
अनुवादकः बिन्ते ज़हरा नक़वी ''नदल हिन्दी'' साहेबा

इमामे ज़माना[अ०] और महदवियत का अक़ीदा

260[हि०] मुताबिक़ 803[ई०] इमाम हसन असकरी[अ०] की शहादत के बाद ख़ुदा ने बारहवें इमाम हज़रत महदी[अ०] को ग़ैबत के पर्दे में छुपा दिया ताकि नेकी का रास्ता दिखाने वाला ज़ुल्म के अन्धेरे से बचा रहे।

इमाम की ग़ैबत के ज़माने को दो दौर में बांटा जा सकता है। एक ग़ैबते सुग़रा जिसकी मुद्दत 260[हि०] मुताबिक़ 873[ई०] से 329[हि०] मुताबिक़ 940[ई०] तक है और दूसरे ग़ैबत कुबरा जो 329[हि०] मुताबिक़ 940[ई०] से शुरु होती है। ग़ैबत सुग़रा के दौरान इमाम अपने नाएबों के ज़रिये (नवाब अरबा) अपने पैरवी करने वालों से ताल्लुक़ रखते थे मगर इसके बाद से ये ज़ाहिरी ताल्लुक़ भी ख़त्म हो गया और इमाम पूरी तरह ग़ैबत के पर्दे में चले गये एक सही मुद्दत के लिए जिसे ख़ुदा ही तैय करेगा उस वक़्त ख़ुद ही सामने आयेंगे। हमारा अक़ीदा है कि इमाम महदी[अ०] के ज़ाहिर होने के साथ दुनिया में इन्साफ़ और अल्लाह का निज़ाम क़ायम हो जायेगा और इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम पूरी तरह नाफ़िज़ हो जायेगी।

मुमकिन है ये सवाल पैदा हो कि क्या किसी की इतनी लम्बी उम्र हो भी सकती है? जवाब ये है कि इमाम ऐसे इन्सान हैं जिन पर ख़ुदा की ख़ास नेमतें और मेहरबानियाँ होती हैं। वह इन्सान भी हैं और ख़ास ताक़त और इख़्तियार के मालिक भी हैं और रूहानी बलन्दी के हिसाब से मानवी दर्जों की आख़िरी मंज़िलों पर हैं, अगर इन मुक़द्दस हस्तियों में से कोई हस्ती आम इन्सानों से अलग ज़माने और जगह की क़ैद से ख़ुदा की ख़ास मेहरबानियों की वजह से आज़ाद हो तो कोई ताज्जुब की बात नहीं। अगर हम ख़ुदावन्दे आलम की ज़ात, उसकी क़ुदरत और रूहानियत पर अक़ीदा रखते हैं तो हमारे लिये इस हक़ीक़त को समझना कुछ भी मुश्किल नहीं कि इमामों में से कोई सदियों तक मौत से बच सकता है, क्योंकि ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस जो मौत और ज़िन्दगी के क़ानून का बानी है, बिना किसी शक के किसी की ज़िन्दगी को आम हालत से ज़्यादा अपनी चाहत के हिसाब से लम्बा कर देने पर क़ादिर है। किसी मुसलमान के लिए ख़ासकर इस बात में शक या तरदीद की जगह नहीं है क्योंकि क़ुरआन के हिसाब से हर मुसलमान का ये अक़ीदा है कि हज़रत ईसा[अ०] और हज़रत ख़िज़्र[अ०] आज भी ज़िन्दा हैं और हज़रत नूह[अ०] ने सैकड़ों साल की उम्र पायी है।

ग़ैबत में इमाम[अ०] का क्या रोल है?

मुमकिन है सवाल पैदा हो कि इमाम ग़ैबत में कौन सा रोल अदा कर रहे हैं या क्या उनकी इमामत बेकार और बेमक़सद है? ये शक इमामत की हक़ीक़त और इस्लाम के फ़राएज़ से अज्ञानता के कारण है। जैसा कि बार-बार बताया गया है कि इमाम सिर्फ़ सियासी, इज्तेमाई और फ़िक्री रहबरी के फ़राएज़ अन्जाम नहीं देता बल्कि अहम मानवी, बातिनी और रूहानी फ़राएज़ भी अन्जाम देता है। इमाम दुनिया वालों के लिये ख़ुदा की

नेमतों का ज़रिया है जो लोग इन्सानी और मानवी बलन्दियों पर चढ़ते हैं इमाम उन रूहों की रहबरी करता है। इमाम के फ़राएज़ सिर्फ़ इज्तेमाओ और माद्दी ही नहीं हैं बल्कि बातिनी भी हैं। इमाम सिर्फ़ जिस्म ही से नहीं बल्कि रूह से भी ताल्लुक़ रखता है और मोमिनों की रहनुमाई करता है। इमाम के इस अजीब और छुपे हुए अन्दाज़ को अगर सामने रखा जाये तो इसके ज़रिये हम ग़ैबत के ज़माने में इमाम के किरदार को समझ सकते हैं।

क़ुरआन मजीद में भी अन्दुरूनी रहबरी और हिदायत की तरफ़ इशारा मौजूद है और इल्यास[अ०] और ख़िज़्र[अ०] जैसे नबियों की तरफ़ इशारा किया गया है जो ख़ुफ़िया तौर से लोगों को भलाई का रास्ता दिखाते हैं। इमाम आफ़ाक़े बातिन में भी मौजूद होता है।

जैसा कि इससे पहले भी कहा जा चुका है कि इमाम दुनिया वालों के लिए नेमतों और भलाइयों का ज़रिया है। ख़ुदा ने इन्सान को अपनी मख़लूक़ के नमूने के तौर पर पैदा किया है जिसमें कुछ मलकूती ख़ूबियाँ भी पायी जाती हैं। ''अल्लाह ने आदम को अपनी ही सिफ़ात पर पैदा किया है'' लेकिन सिर्फ़ उन इन्सानों में, जो पैग़म्बर और इमाम हैं, अपने पैदा करने की बड़ाई के हर पहलू, हर रुख़ और ख़ूबी को ज़ाहिर करता है। इस तरह इमाम पैदा करने वाले की बड़ाई का नमूना होते हैं। जिस तरह एक तस्वीर बनाने वाला सारे नक़्श अपना नमूना बनाने के लिए खींचता है उसी तरह दुनिया के पैदा करने वाले ने भी ज़मीन और आसमान इन्हीं पाक हस्तियों के लिए पैदा किये हैं जैसा कि हदीसे क़ुद्सी में आया है कि ''ऐ मुहम्मद[स०] अगर तुम न होते तो मैं ये ज़मीन व आसमान न पैदा करता'' ऐसी सूरत में सारे इमाम भी इसी ''हक़ीक़ते मुहम्मदी'' से हैं जैसा कि हदीस में आया है: ''हमारे पहले भी मुहम्मद हैं दरमियानी भी मुहम्मद हैं और आख़िरी भी मुहम्मद हैं'' इस हिसाब से सारे इमाम इस हदीसे क़ुद्सी के मिस्दाक़ है।

इसलिए हर ज़माने और हर दौर में हस्ती के बाक़ी रहने की वजह और ख़ुदा की नेमतों के इन्सानों तक पहुँचने का रास्ता हैं।

इमाम ग़ैबत के पर्दे में वह सूरज हैं जिसके चारो ओर ज़मीन, चाँद और सितारे घूम रहे हैं, जानते-बूझते और अन्जाने में सभी मौजूद इमाम की ज़ात से हिदायत की रौशनी हासिल करते हैं, इसी वजह से इमाम रिज़ा[अ०] की मशहूर हदीस में आया है कि ''इमाम चमकते हुए सूरज की तरह है जो सारे आलम को रौशनी देता है और वह इतना बलन्द है जहाँ न नज़र उसे पा सकती है न हवास उसे छू सकते है''।

ग़ैबत की फ़्लासफ़ी

महदवियत के नज़रिये की बुनियाद क्या है? इस नज़रिये को समझने के लिए ज़रूरी है कि पहले हम तारीख़ के फ़लसफ़े और हस्ती के बारे में इस्लामी नज़रिये को जानें। तारीख़ की तरक़्क़ी और दुनिया में इन्सानी ज़िन्दगी के आज़माइशी हालत और इन्सान के इन्तेख़ाब और आज़ाद इरादे का मालिक होने के इस्लामी नज़रिये की रौशनी में हम नबियों के भेजे जाने की ज़रूरत, नुबुव्वत के ख़त्म होने का राज़ और बारह इमामों के तैय किये जाने की ज़रूरत और हज़रत महदी[अ०] की ग़ैबत और दोबारा ज़ाहिर होने के फ़लसफ़े को समझ सकते हैं। इस्लामी नज़रिये से ख़ुदा ने इन्सान को ऐसे मौजूद के तौर पर बनाया है जो सबसे अच्छी पैदाइश और 'इरादा', 'अक़्ल', 'ईमान' और इश्राक़ यानी इल्हाम का मालिक है। ख़ुदा ने इन्सान को 'इरादे' की आज़ादी और इन्तेख़ाब की ताक़त दी है, जो एक तरफ़ तो ख़ुदा की बड़ी मेहरबानी है मगर दूसरी तरफ़ ऐसी बड़ी ज़िम्मेदारी दी जिसे क़ुबूल करने से पहले, ज़मीन और आसमान ने इन्कार कर दिया था। अगर इरादे की आज़ादी और इन्तेख़ाब की ताक़त न हो तो इन्सान जानवरों और चौपायों से भी नीच हो जाए।

मगर इन्तेख़ाब उस वक़्त काम आता है जब रास्ता साफ़ हो। ख़ुदा ने (जिसकी मेहरबानी उसके वजूद से जुड़ी हुई है) ''नुबुव्वत'' का सिलसिला इसी मक़सद के लिए और इन्सान की भलाई और नजात के रास्ते बनाने के लिए ही क़ायम किया। इन्सान की रूहानी तरक़्क़ी के साथ-साथ एक के बाद एक पैग़म्बर भेजे गये और बहुत सी हक़ीक़तों के चेहरे खोले गये यहाँ तक कि हज़रत मुहम्मद[स०] को भेजे जाने और क़ुरआन के नाज़िल होने के साथ ही बन्दों तक ''हक़ीक़त'' और ''पैग़ाम'' पूरी तरह पहुँच गये, दीन पूरा हो गया, उसके अरकान और असली निशान तैय हो गये। चूँकि ''पैग़ाम'' पहुँचाने का काम पूरा हो चुका था, इसलिए हज़रत मुहम्मद[स०] के साथ ही नबियों के भेजे जाने का सिलसिला ख़त्म हो गया, और हज़रत ख़ातमुल अम्बिया की रिसालत की पैरवी हर ज़माने के लिए ज़रूरी हो गयी और इसके बाद से क़यामत तक सारे इन्सानों की ज़िम्मेदारी है कि पैग़म्बरे इस्लाम[स०] की पैरवी करें।

इसके बाद शरह व तफ़सीर और इजरा व निफ़ाज़ का नम्बर आता है क़ुरआन में ''पैग़ाम'' एक साथ पहुँच गया मगर आम इन्सानों के लिए अल्लाह के कलाम की बारीकियों का समझना मुमकिन न था इसलिए ज़रूरत थी ऐसे ख़ुदाई लोगों की जो एक तरफ़ तो हदीसों से क़ुरआन के पैग़ाम के नुकतों और बारीकियों की तफ़सीर व तशरीह और पैग़म्बर की सीरत की तफ़सील पेश करें दूसरी तरफ अमली तौर पर सिखायें कि अलग-अलग हालात में इन्सान किस तरह का तरीक़ा अपनाये। इसके अलावा क़ुरआन के साथ-साथ ज़रूरत थी कि कुछ ऐसे लोग हो जो इन्सानों के लिए ''हमेशा के नमूने'' और अमली नमूने हों, इसलिए ख़ुदा ने ''इमामत'' का सिलसिला बना दिया।

लेकिन इन्सानों की तरबियत (नुबुव्वते आम्मह) और ख़ुदा का ''पैग़ाम'' पूरे तौर पर पहुँच जाने के बाद (नुबुव्वते ख़ास्सह) जब इलाही मुअल्लिमों और रहबरों ने इसकी तशरीह कर दी (इमामत का मन्सब) तो ख़ुदा की ख़ुदाई का रुख़ इस तरफ़ हुआ कि एक इमाम को ग़ैबत के पर्दे में छुपा दे ताकि पैग़म्बरों और पिछले इमामों की तालीमात की रौशनी में और अपनी अक़्ल की मदद और फ़िक्री ताक़त के ज़रिये अपने इज्तेहाद को सही तौर पर पूरा करें। ग़ैबत के बाद का दौर ''इज्तेहाद'' का दौर है। इन्सानों को चाहिए कि वह अपने इल्म और अपनी अक़्ल का सही इस्तेमाल करें ताकि वह्य और पैग़म्बर और इमामों की हिदायत का रास्ता दिखाने वाली सीरत और रहबरी की रौशनी से अपने मसाएल के हल के सिलसिले में फ़ायदा हासिल करें। आख़िरकार ख़ुदा की क़ुदरत दोबारा इमाम को ग़ैबत के पर्दे से ज़ाहिर करेगी ताकि दुनिया में मिसाली समाज और मिसाली निज़ाम क़ायम हो। इन्सान ग़ैबत के ज़माने में एक इम्तिहान और आज़माइश में है, इसके बाद ख़ुदा दोबारा इमाम को पर्दे से ज़ाहिर करेगा और सही को ग़लत से और हक़ को बातिल से अलग कर देगा।

हम इस हिदायत के पूरे ख़ुदाई इन्तिज़ाम को एक स्कूल की तरह समझ सकते हैं, जैसे पहले कई दर्जों की तालीम पूरी करायी गयी (नबियों के भेजे जाने से) और लिखवाकर (वह्य से) भी रास्ता बताया गया आख़िरी दर्जे में शरीअत को पूरा किया गया (पैग़म्बर[स०] को भेजकर) फिर ग्यारह इमामों ने इस तालीम को अमली तौर पर करके दिखाया (इमामत का दौर) इसके बाद मुअल्लिम को ग़ैबत के पर्दे में छुपा लिया गया और शार्गिदों को छोड़ दिया गया कि अक़्ल व समझ और महारत के बूते पर इम्तिहान दें (ग़ैबत का ज़माना) इसके बाद मुअल्लिम दोबारा ज़ाहिर होंगे और सही जवाब को अमली तौर पर बतायेंगे (ज़हूर) इस मिसाल से हम ग़ैबत के फ़लसफ़े को थोड़ा सा समझ सकते हैं।